



**HINDI B – STANDARD LEVEL – PAPER 1**  
**HINDI B – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1**  
**HINDI B – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1**

Monday 17 May 2004 (morning)  
Lundi 17 mai 2004 (matin)  
Lunes 17 de mayo de 2004 (mañana)

1 h 30 m

---

**TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES**

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

**LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS**

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

**CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS**

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

## पाठांश क अब निर्देशक बनना चाहती हैं रेवती



दक्षिण की अनुभवी अभिनेत्री रे-  
वती के निर्देशन की पहली  
फिल्म 'मित्र-माई फ्रेंड' कई  
मायनों में दिलचस्प है।  
पहली बात तो यह कि इसमें

भाग लेने वालों की सूची में सभी महिलाएं हैं, जिनमें से एक-दो ही अनुभवी हैं।  
दूसरे यह सीधे-सीधे अमेरिका में बसे १५ लाख भारतीय लोगों के लिए है, और  
अंत में यह गैर-फार्मूला फिल्म का दर्जा रखती है। कैलीफोर्निया की सिलिकान वैली  
में फिल्मायी गयी फिल्म (अंग्रेजी में) १८ वर्षों से अमेरिका में रहने वाले एक  
भारतीय परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। मां (राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शोभना) अपनी  
भारतीय जड़ों के लिए बेहद तरसती रहती है जबकि न तो पिता (मॉडल नासिर  
अब्दुल्ला) ना ही पुत्री (नवोदिता प्रीति विस्सा) उसे समझते हैं।

### उदाहरण

मुझे अभिनय करना पसंद है लेकिन फालतू की भूमिकाएं करने से अच्छा अभिनय न  
करना है। मैंने तय किया है कि भूमिकाएं चुनकर लूंगी और अभिनेत्री के बतौर मुझे  
चुनौतीपूर्ण लगने वाली भूमिकाएं ही करूंगी। वास्तविक अच्छी भूमिकाओं का  
इंतजार करना ठीक रहेगा।

१

हां यह कहानी से संबंधित है। फिल्म देखने पर आपको पता चलेगा। इसके अलावा  
मैं पूरी तरह भारतीय होना चाहती थी इसलिए फ्रेंड के लिए संस्कृत शब्द 'मित्र' रखा।

२

यह फिल्म मुख्यतया अमेरिकी बाजार के लिए हैं। मैं इसे किसी अन्य आम फिल्म  
की तरह अमेरिका में रिलीज करना और भारतीय फिल्मों के लिए बाजार बनाना  
चाहूंगी।

उसकी अवधि अंतरराष्ट्रीय दर्शकों की चाहत के मुताबिक है- एक घंटा ४५ मिनट।  
मेरा खयाल है कि अच्छी पहुंच होने से यह चलेगी क्योंकि अमेरिका में १५ लाख से  
ज्यादा भारतीय हैं जिनमें से ३ लाख कैलीफोर्निया में हैं। इसलिए बात उन तक  
पहुंचने की और उन्हें फिल्म देखने के लिए प्रेरित करने की है।



३

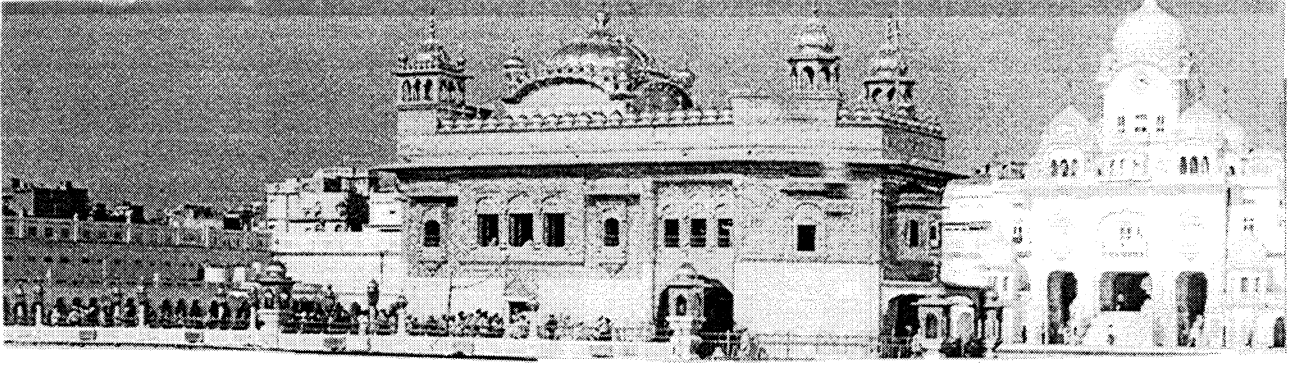
मैं थोड़ा चिंतित थी। मुझे यकीन नहीं था कि जो मैं चाहती हूँ कर भी पाऊंगी। मैंने  
तय किया कि मैं अभिनय नहीं करूंगी या कोई हिस्सा नहीं दिखाऊंगी क्योंकि हर  
पात्र मुझ जैसा दिखने लगता। लेकिन जब शूटिंग शुरू हुई, तब मैंने महसूस किया  
कि मेरे पास बुद्धिमान कलाकार हैं और जानते हैं कि मैं क्या चाहती हूँ। मुझे बस उन्हें  
जरा सा तैयार करना पड़ा क्योंकि मेरे कई नये कलाकार थे।

यह ज्यादातर तो लक्ष्मी जैसी महिलाओं के बारे में है।

४

मेरा खयाल है कि यह सिर्फ अमेरिका में बसे भारतीयों की बात नहीं करती बल्कि  
विदेश में बस गये किसी भी व्यक्ति के बारे में है। मानवी संबंध और संस्कृति सारी  
दुनिया में एक जैसे होते हैं। मुझे आधार की जरूरत थी और चूंकि मैं भारतीय  
संस्कृति और भावनाओं को जानती हूँ, मैंने भारतीय मूल का परिवार चुना।

## पाठांश ख



र नू और अमित उदाहरण सोच रखा था कि बच्चों १४ इन गर्मियों की छुट्टियों में कहीं घुमाने ले कर जरूर जाएंगे। इम्तहान खत्म होते १५ बिना १६ प्लानिंग किए निकल पड़े शिमला। वहां पहुंच कर चला कि आगे आनेवाले सात दिन १७ किसी होटल में कोई कमरा खाली नहीं है। बुरे फंसे! हार कर उन्हें पहली रात तो अपनी गाड़ी में ही बितानी पड़ी, मगर किस्मत से अगले दिन एक होटल में उन्हें कमरा मिल ही गया। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि अचानक बने कार्यक्रमों में इस तरह की समस्या का सामना करना ही पड़े। मगर काफी हद तक ऐसी दिक्कतें आड़े आ सकती हैं। इन तमाम झंझटों से बचने के लिए बेहतर होगा कि पूर्व नियोजित ढंग से सफर किया जाए

सबसे पहले कार्यक्रम की रूपरेखा बना लें, अब उसको ध्यान में रखते हुए धन आदि की व्यवस्था करें, आप जहां जा रहे हैं, वहां का रेल आरक्षण भी दो महीने पहले करा लेना ठीक रहता है। आइए, इसके बारे में विस्तार से जान लें।

### दो महीने पहले

अगर छुट्टियों के लिए किसी लंबे सफर पर या विदेश जा रहे हैं, तो उसकी रूपरेखा बहुत पहले ही बना लें। सबसे पहले तय दिनों के अनुसार कपड़े, सामान व धन की व्यवस्था करें, फिर उसके आधार पर आगे की यात्रा और वापसी का आरक्षण भी करा लें। वहीं यात्रा के दौरान भ्रमण करनेवाले पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी एकत्र करने का समय भी मिल जाएगा। यदि पहले से पता हो कि कहां, क्या देखना है और वहां किस मौसम में जाना ठीक रहेगा, कितने दिन ठहरना चाहिए, घूमने और आने-जाने के लिए साधन आदि के बारे में विवरण मिल जाए, तो सफर सुखद और आरामदायक रहता है। इस विषय में समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में छपता रहता है। वहीं पर्यटन कार्यालयों तथा इंटरनेट से भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। होटल में आरक्षण कराने से पूर्व ध्यान रखें कि आपको वहां उपलब्ध सुविधाओं और उस स्थान के बारे में पूरी जानकारी हो।

### जब गंतव्य पर पहुंचें

पर्यटन स्थल पर पहुंच कर सबसे पहले तो मुआयना करें कि आपके ठहरने की जगह ठीक है या नहीं। वहां से केवल पर्यटन विभाग के साइट सीइंग दूर ही बुक कराएं। ये कुछ महंगे जरूर होते हैं, लेकिन इनमें यात्रियों की सुविधा का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। कुछ पैसे बचाने के चक्कर में निजी ऑपरेटर्स के झांसे में ना आएं। ये अपना लाभ देखते हैं और ज्यादातर उन्हीं दुकानों पर यात्रियों को शॉपिंग के लिए ले जाते हैं, जहां से उन्हें भारी कमीशन मिलता है। वहां देर हो जाने पर समय पूरा हो जाने का बहाना बना कर कई पर्यटन स्थल दिखाने नहीं ले जाते। इससे उन पर्यटकों को निराशा होती है, जिनका मुख्य उद्देश्य भ्रमण होता है। अगर आपका उद्देश्य नए पर्यटन स्थल एक्सप्लोर करना है, तो इन दूर ऑपरेटर्स से दूर ही रहें।

### सफाई का रतों ध्यान

किसी भी पर्यटन स्थल पर जा कर वहां के पर्यावरण और संस्कृति को नुकसान पहुंचाने की कोशिश ना करें। यह बहुत ही अशोभनीय व्यवहार है। इससे आप प्रकृति को नुकसान पहुंचा रहे हैं। जरा सोचिए, जिस प्रकृति के स्वच्छ वातावरण का आनंद लेने आप यहां आए हैं, उसी को नुकसान पहुंचा कर आप अन्याय नहीं कर रहे? हमेशा पहाड़ों पर अपने साथ ले गए सामान जैसे पानी की बोतलें, पोलिथिन वगैरह खाली होने पर इधर-उधर ना फेंकें। इन्हें या तो कूड़ेदान में डालें या फिर अपने साथ वापस ले जाएं। आजकल हर टूरिस्ट स्पॉट पर जगह-जगह कूड़ेदान बना दिए गए हैं। इन्हें उपयोग में लाएं। यात्रा के दौरान इन बातों को ध्यान में जरूर रखें। इससे आपकी यात्रा निश्चय ही सुखद होगी और आप एक अच्छे नागरिक होने का फर्ज भी अदा कर पाएंगे।

पाठांश ग

# कैसे करें अंगरेजी भाषा की तैयारी

यू तो किसी भी भाषा पर पकड़ बहुत जरूरी है परंतु इंग्लिश के मामले में आपका भाषा ज्ञान अधूरा रहेगा तो सफलता में संदेह है, तो सफलता के इस सूत्र में इंग्लिश को भी पिरोइए। इसके लिए आपको अंग्रेजी अपने व्यवहार में उतारनी होगी। यू तो हमारे हिंदी भाषी देश में हिंदी की जानकारी ही प्रमुख और प्राथमिक मानी जानी चाहिए पर यह सर्वमान्य होता जा रहा है कि विभिन्न भाषाओं से जुड़ने के लिए अंग्रेजी का ज्ञान एक आवश्यकता बन गयी है।

खुद आप अपने को ही देखें, नौकरी के लिए आवेदन करते समय आप बायोडेटा किस भाषा में बनाते हैं?

इंटरव्यू के पहले क्या आप अंग्रेजी में बातचीत करने के कुछ तरीके नहीं सीखते? असल में देखा जाये तो हम अंग्रेजी भाषा को 'इग्नोर' नहीं कर सकते।

सवाल ये उठता है कि कैसे यह सब किया जाये। यह हमारे देश के काफी राज्यों की आम समस्या है कि यहां छात्र बड़ी-बड़ी डिग्रियां तो आसानी से पास कर लेते हैं लेकिन अंग्रेजी न बोल पाने के कारण कई जगहों में मात खा जाते हैं। डिग्री

लेकर जब वे इंटरव्यू कक्ष में घुसते हैं तो अंग्रेजी के एक-दो प्रश्न बंदूक से निकली गोली के समान इस तरह उनके समक्ष आ खड़े होते हैं कि डिग्री दबाए वे यही सोचते रह जाते हैं कि यहां 'शैल' का प्रयोग होगा या 'शुड' का।

इस शैल और शुड के भंवर में वे खुद ही डूब जाते हैं और मूक बनकर रह जाते हैं। लेकिन ऐसे तो काम चलेगा नहीं और न ही ऐसे सफलता मिल पायेगी और फिर बार-बार हम यू मायूस क्यों होते रहें जबकि हम भी अंग्रेजी भाषा में अपनी पकड़ बना सकते हैं। अंग्रेजी भाषा में सुधार के लिए चार बातें बहुत जरूरी है। पढ़ना, सुनना, बोलना और लिखना।

यदि आप वाकई अंग्रेजी सुधारना चाहते हैं तो इसका सबसे सस्ता और कामयाब तरीका है कि रोज अंग्रेजी अखबार पढ़ें। अंग्रेजी पुस्तकें पढ़कर भी आप फायदा उठा सकते हैं।

टीवी और रेडियो पर अंग्रेजी समाचार और डिस्कशन वाले कार्यक्रम अवश्य सुनें। इससे आपको दोहरा फायदा होगा। एक तो अंग्रेजी में सुधार होगा और दूसरा आप भाषा का लहजा और उच्चारण भी जान जायेंगे।

अंग्रेजी फिल्में भी इस दिशा में आपकी मदद कर सकती हैं।

सिर्फ अंग्रेजी सुनने और पढ़ने से बात नहीं बनेगी जब तक कि आप बोलना शुरू नहीं करते। शुरूआत में झिझक तो होती ही है।

यदि घर में अंग्रेजी का माहौल न हो तो अपने दोस्तों के साथ अंग्रेजी में बातचीत करें। आपकी गलती पर कोई हंसे तो उस तरफ ध्यान दें, हतोत्साहित न हों, छोटी-मोटी गलतियां सुधार कर कल आप फ्लुएट बन जायेंगे।

अंग्रेजी लिखने का भी अभ्यास करें। अपनी भावनाओं को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त करें। अपनी पर्सनल डायरी अंग्रेजी में लिखकर आप इसकी शुरूआत कर सकते हैं।

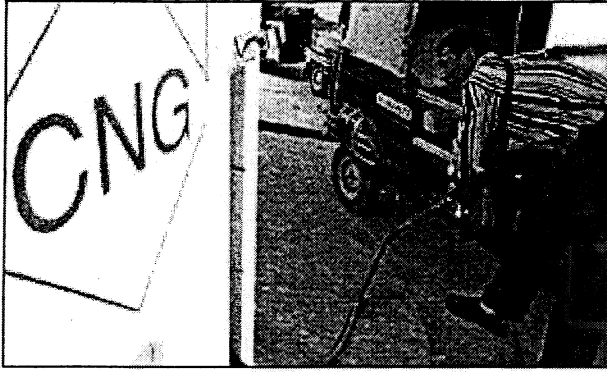
इन सब बातों को व्यवहार में लाते हुए यदि आप किसी संस्थान से जुड़ना चाहें जहां अंग्रेजी भाषा सिखाई जाती हो तो ये विकल्प भी आपके पास है। आज कई ऐसे संस्थान देश भर में हैं जो अंग्रेजी बोलना और लिखना सिखाते हैं।

अंग्रेजी भाषा में मजबूत पकड़ के लिए व्याकरण से परिचित होना

आवश्यक है। लेकिन रोजमर्रा की भाषा में व्याकरण से ज्यादा उसके प्रयोग पर ध्यान दें। इस बात का भी ध्यान रखें कि आप क्रिया का सही उपयोग कर रहे हैं या नहीं और आपका उच्चारण सही है कि नहीं।

अंग्रेजी शब्दों का ज्ञान भी बढ़ाएं क्योंकि सारा दारोमदार इस पर ही है कि आप कितने फर्फटे से अंग्रेजी बोल पाते हैं। ये तभी संभव है जब आपके दिमाग से शब्दकोष की तरह शब्दों का भंडार हो।

## 'दिल्ली में रात में तारे दिखते हैं'



सीएनजी ईंधन ज़रूरी करने से प्रदूषण में कमी आई

गहरे काले धुएँ के गुबार में लिपटी भारत की राजधानी दिल्ली की यादें आज भी ताज़ा हैं। लेकिन आज की दिल्ली में साफ़ हवा में साँस लेना पहले की तुलना में काफ़ी हद तक संभव है।

राजधानी दिल्ली में होने वाले वायु प्रदूषण में 70 प्रतिशत योगदान पेट्रोल और डीज़ल से चलने वाले वाहनों का है।

पेट्रोल की गुणवत्ता में सुधार के साथ सीएनजी ईंधन के इस्तेमाल को लेकर बनाए गए नियम-कानूनों ने वायु प्रदूषण को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वायु प्रदूषण के प्रति जनचेतना जागृत करने में लगी सेंटर फ़ॉर साइंस एंड एन्वायरन्मेंट यानी सीएसई जैसी गैर सरकारी संस्थाओं के अलावा भारत के सर्वोच्च न्यायालय की पहल ने वायु प्रदूषण की समस्या से निबटने में दिल्लीवासियों की मदद की है।

## रात में तारे

सीसारहित पेट्रोल की बिक्री और तिपहिया वाहनों सहित बसों में डीज़ल की जगह सीएनजी के इस्तेमाल को अनिवार्य बना देने के न्यायालयों के आदेशों ने वायु प्रदूषण के स्तर को बढ़ने नहीं दिया।

## सीएनजी की समस्या

लेकिन दिल्ली के बस और तिपहिया चालकों को अब दिन में ही तारे दिखाई पड़ रहे हैं।

डीज़ल से चलने वाली बसों और पेट्रोल और मोबिल के मिश्रण से चलने वाले तिपहिया वाहनों को सीएनजी से चलाने का आदेश आया और इंजिनों में तकनीकी दृष्टि से आवश्यक परिवर्तन भी कर दिए गए।

लेकिन सीएनजी की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति के लिए प्रबंध नहीं कराए गए।

गैस के साथ-साथ गैस स्टेशनों की कमी ने दिल्ली की सड़कों पर वाहनों की लंबी कतारें लगा दीं।

## मेट्रो से उम्मीद

पूरी व्यवस्था चरमराती नज़र आई।

सीएसई की निदेशक सुनीता नारायण कहती हैं, इसके लिए सरकार पूरी तरह से दोषी है। सरकार जितना कर सकती थी और जितना उसको करना था, वह आज तक नहीं हुआ।

अब आगे क्या हो? कैसे सुधरेगी दिल्ली की प्रदूषित हवा?



मेट्रो बनने से प्रदूषण स्तर में डॉक्टर दिलीप विश्वास की राय और सुधार की उम्मीद है कि इसके लिए एक एकीकृत और समन्वित नीति पर चलना होगा।

सार्वजनिक यातायात के साधनों को विकसित करने की ज़रूरत पड़ेगी और दिल्ली मेट्रो जैसी अन्य योजनाओं को क्रियान्वित करना होगा।